Vol 4 Issue 12 Sept 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 4 | Issue - 12 | Sept - 2015

''प्राचीन भारतीय राजनीति में वैवाहिक सम्बंधों की भूमिका (छठी शताब्दी ईसा पूर्व से गुप्त काल तक)''

वन्दना संत
सहायक प्रोफेसर , नारी शिक्षा निकेतन पी.जी. कॉलेज, लखनऊ.

प्रस्तावना :

किसी भी साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करने में तीन कारक अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं – युद्ध, मैत्री व वैवाहिक सम्बंध। प्राचीन भारत में ऐसे अनेक शासक हुए हैं जिन्होंने युद्ध एवं मैत्री के अतिरिक्त वैवाहिक सम्बंधों के द्वारा भी अपने साम्राज्य को सुदृढ़ता प्रदान की। ये वैवाहिक सम्बंध न केवल सम्राटों के व्यक्तिगत जीवन में अपितु राजनीतिक जीवन में भी महती भूमिका निभाते रहे हैं। प्राचीन भारतीय राजनीति में वैवाहिक सम्बंधो का अत्यधिक महत्व रहा है।

मगध साम्राज्य का उत्कर्ष प्राचीन भारतीय राजनीतिक जीवन की महत्वपूर्ण घटना है मगध में ही सर्वप्रथम साम्राज्यवादी नीति के प्रमाण मिलते हैं। जिसका प्रारम्भ हर्यक वंश के शासक बिम्बिसार (५४४ – ४९२ ईसा पूर्व लगभग) से माना जाता है।[१] गद्दी पर बैठते ही उसने विस्तारवादी नीति का अनुसरण किया। वह एक महत्वाकांक्षी, कूटनीतिज्ञ एवं दूरदर्शी शासक था। सर्वप्रथम उसने अपने समय के प्रमुख लिच्छवि गणराज्य के शासक चेटक की पुत्री चेलना (छलना) के साथ विवाह कर मगध राज्य को उत्तर की तरफ से सुरक्षित कर लिया।[२] लिच्छवियों की राजधानी वैशाली (बसाढ़) व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र भी थी। इसकी दक्षिणी सीमा से होकर गंगा नही बहती थी और उसके माध्यम से कुछ सीमा तक जलीय व्यापार को भी नियंत्रण में किए हुए थी। अप्रत्यक्ष रूप से इस वैवाहिक सम्बंध ने मगध की आर्थिक समृद्धि को भी प्रभावित किया। विनयपिटक के अनुसार लिच्छवि लोग रात को मगध की राजधानी पर उत्तर की ओर से आक्रमण कर लूटपाट करते थे। इस विवाह के पश्चात् यह आक्रमण समाप्त हो गए।[३]

बिम्बिसार का दूसरा वैवाहिक सम्बंध कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन महोकाशला (कौशल देवी) के साथ हुआ।[४] कोशल नरेश ने बिम्बिसार को एक लाख की वार्षिक आय का काशी प्रांत अथवा उसके कुछ ग्राम दहेज में दिए।[५] चूंकि कोशल व वत्स राज्य परस्पर मिले हुए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि इस सम्बंध से वत्स की ओर से भी मगध सुरक्षित हो गया होगा। तिब्बती लेखकों के अनुसार उसकी एक रानी वासवी थी।[६] संभवतः वास्वी विदेह राज्य की पुत्री थी।[७] संभव है कि उसने अन्य राजवंशों के साथ भी सम्बंध स्थापित किए हो, क्योंकि महावग्ग में उसकी ५०० रानियों का उल्लेख हुआ है।[८] उसकी इस नीति पर कहा गया है किं उसके कूटनीतिक तथा वैवाहिक सम्बंधों ने उसके द्वारा प्रारम्भ की गयी आक्रामक नीति में पर्याप्त सहायता प्रदान की होगी।[९]

बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार बिम्बिसार की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी कोसल देवी की भी दुःख से मृत्यु हो गयी। जैन ग्रन्थों के अनुसार बिम्बिसार के पुत्र अजात शत्रु (७९४ – ४६० ईसा पूर्व) ने उसे बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया जहां भीषण यातनाओं से उसे मार डाला गया। अतः प्रसेनजित इस इस घटना से बड़ा क्रुद्ध हुआ था उसने काशी को अपने अधिकार में ले लिया। फलस्वरूप प्रसेनजित व अजातशत्रु के मध्य संघर्ष जिसमें पहले प्रसेनजित और बाद में अजातशत्रु पराजित हुआ और बन्दी बना लिया गया। बाद में दोनों नरेशों के मध्य सन्धि हो गयी तथा प्रसेनजित ने अपनी पुत्री वजिरा का विवाह अजातशत्रु के साथ करके काशी पर उसका अधिकार स्वीकार कर लिया। इस प्रकार इस विवाह से काशी पुनः मगध साम्राज्य का अंग बन गया।[१०]

भास के अनुसार अजातशत्रु की कन्या पद्मावती का विवाह वत्सराज उदयन के साथ हुआ था। इस वैवाहिक सम्बंध द्वारा अजातशत्रु ने वत्स को अपना मित्र बना लिया तथा अब उदयन मगध के विरूद्ध प्रद्योत (अवन्ति नरेश) की सहायता नही कर सकता था।[११] ज्ञातव्य है कि अवन्ति नरेश प्रद्योत के आक्रमण से अपनी राजधानी राजगृह को सुरक्षित करने के उद्देश्य से अजातशत्रु ने उसका दुर्गीकरण करवाया था।[१२] पद्मावती एवं उदयन के विवाह के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि उदयन दोनों राज्यों अवन्ति तथा मगध के मध्य सुलहकार बन गया था।[१३] इस वैवाहिक सम्बंध ने अजातशत्रु की स्थिति को सुदृढ़ किया होगा एवं बिम्बिसार व अजातशत्रु के वैवाहिक सम्बन्धों के फलस्वरूप काशी, कोसल, वैशाली मगध साम्राज्य के अंग बन गये (चित्र संख्या–१)

इसके पश्चात् शिशुनाग वंश एवं नंद वंश के किसी भी शासक के ऐसे किसी विवाह सम्बंध की जानकारी प्राप्त नही होती है। जिसने राजनीति को प्रभावित किया हो।

मौर्य राजवंश ने प्राचीन भारतीय राजनीति में साम्राज्यवाद का वास्तविक अर्थों में न केवल बीज बोया अपितु उसे पर्याप्त मात्रा में पल्लवित और पोषित भी किया। मौर्यवंश के प्रथम शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के समय लगभग २०५ ईसा पूर्व में एण्टिओकस के पुत्र सेल्यूकस ने भारत पर चढ़ाई कर दी।[१४] जिसे चन्द्रगुप्त मौर्य ने विफल कर दिया। यूनानी लेखकों एवं कुछ विद्वानों के अनुसार कालान्तर में दोनों में सन्धि हो गयी एवं सेल्यूकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर दिया।[१५] परन्तु अन्य किसी प्रमाण से इस प्रकार की कोई सूचना नही मिलती। अगर वैवाहिक सम्बन्ध हुआ भी होगा तो सन्धि की शर्तों के फलस्वरूप हुआ होगा जिससे दोनों के सम्बन्ध पहले की अपेक्षा बेहतर हुए होंगे। परन्तु प्रमाणों के अभाव में निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता।

सिंहली परम्पराओं से ज्ञात होता है कि उज्जयनी जाते हुए सम्राट अशोक विदिशा में रूका जहां उसने एक श्रेष्ठि की पुत्री देवी के साथ विवाह कर लिया। महाबोधिवंश में उसका नाम वेदिश महादेवी मिलता है एवं उसे शाक्य जाति का बताया गया है। उसी से अशोक के पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा का जन्म हुआ। वही उसकी पहली पत्नी थी।[१६] दिव्यावदान में उसकी एक पत्नी तिष्यरक्षिता का नाम मिलता है। अशोक के लेखों में केवल उसकी एक पत्नी कारूवाकी अथवा करूवाकि का ही नाम है जो तीवर की माता थी। यद्यपि मौर्य काल में हुए इन वैवाहिक सम्बन्धों नें राजनीति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया अथवा नही इस विषय में साक्ष्यों का अभाव है अतः निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। किन्तु परोक्ष रूप से अवश्य ही राजनीति पर इसका प्रभाव पड़ा होगा।[१७] मौर्य वंश के पश्चात् शुंग, कण्व एवं सातवाहन वंश ने शासन किया। इन वंशों के किसी थी नरेश के ऐसे विवाह सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त नही होती है जिसने प्रत्यक्ष रूप से राजनीति को प्रभावित किया हो।

जूनागढ़ या गिरनार अभिलेख से सूचना मिलती है कि शक शासक रूद्रदामन (१३०-१५० ई०) ने कई राजकुमारियों का पाणिग्रहण किया था।[१८] इन उल्लेखों से संकेत मिलता है कि उसके समय तक शक भारतीय समाज में पूर्णतया घुलमिल गए थे। संभवतः इन वैवाहिक सम्बन्धों ने रूद्रदामन के राज्य को दृढ़ता प्रदान की होगी।

कुषाण वंश के शासकों में कनिष्क सर्वोपरि है। कनिष्क ने कई क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। चीन के साथ भी उसे युद्ध करना पड़ा। चीनी इतिहासकारों के अनुसार युद्ध का कारण यह था कि कनिष्क ने चीनी सेनापति के पास अपना एक दूत भेजकर हन राजकुमारी से विवाह की मांग की। चीन के प्रसिद्ध सेनापति पान-चाऊ ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया, इस पर रूष्ट होकर कनिष्क ने उसके राज्य पर चढ़ाई कर दी। परन्तु कनिष्क असफल रहा। पान चाऊ ने उसकी सेना को परास्त कर नष्ट भ्रष्ट कर दिया।[१९]

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्वर्णयुग कहे जाने वाले 'गुप्त-काल' में भी कई महत्वपूर्ण वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुए जिनका तत्कालीन राजनीति में अत्यन्त महत्व है। गुप्तकाल के प्रथम नरेश चन्द्रगुप्त प्रथम (३१०-३५० ई०) के शासनकाल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्धों की स्थापना है। लिच्छवियों का सहयोग व समर्थन प्राप्त करने के लिए उसने लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी के साथ स्वयं विवाह किया।[२०] इस वैवाहिक सम्बन्ध की पुष्टि चन्द्रगुप्त प्रथम के स्वर्ण सिक्कों से होती है। जिन्हें चन्द्रगुप्त-कुमारदेवी प्रकार, लिच्छवि प्रकार, राजा रानी प्रकार, विवाह प्रकार आदि नामों से जाना जाता है। इस प्रकार के लगभग पच्चीस सिक्के गाजीपुर, टांडा (फैजाबाद), मथुरा, वाराणसी, अयोध्या, सीतापुर तथा बयाना (राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित) से प्राप्त किए गए हैं। इस तरह का एक चांदी का सिक्का भी प्राप्त हुआ है।[२१] उपर्युक्त सिक्कों के मुख भाग पर चन्द्रगुप्त तथा कुमारदेवी की आकृतियां उनके नामों के साथ अंकित हैं तथा पृष्ठ भाग पर सिंहवाहिनी देवी के साथ-साथ मुद्रालेख ''लिच्छवयः'' उत्कीर्ण है।[२२] (चित्र संख्या-२) समुद्रगुप्त के प्रयाग अभिलेख में उसे लिच्छवि दौहित्र (लिच्छवि कन्या से उत्पन्न) बताया गया है।[२३] इस विवाह सम्बन्ध के तत्कालीन राजनीति में महत्वपूर्ण दूरगामी परिणाम दिखायी पड़ते है। इतिहासकार स्मिथ की धारणा है कि इस वैवाहिक सम्बंध के फलस्वरूप चन्द्रगुप्त ने लिच्छवियों का राज्य प्राप्त कर लिया तथा मगध एवं उसके सभीपवर्ती क्षेत्र का सार्वभौम शासक बन बैठा।[२४] इसके विपरीत एलन महोदय इस विवाह सम्बन्ध को सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हुए लिखते है लिच्छवियों की सामाजिक कुलीनता के कारण ही गुप्तों को लिच्छवि रक्त पर गर्व था।[२५] मनुस्मृति उन्हें स्पष्टतः 'व्रात्य' (धर्मच्युत) कहती है अतः गुप्त लिच्छवि सम्बन्ध सामाजिक दृष्टि की उपेक्षा राजनीतिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण जान पड़ता है।[२६] इस वैवाहिक सम्बन्ध को इतिहासकार हेमचन्द्र रायचौधरी ने भी महत्वपूर्ण माना है।[२७] ऐसा प्रतीत होता है कि कुमारदेवी अपने पिता की एकमात्र सन्तान होने के कारण राज्य की उत्तराधिकारिणी बन गयी थी। अतः चन्द्रगुप्त प्रथम को ही लिच्छवि का राज्य प्राप्त हो गया। कालांतर में दोनों राज्यों का वैधानिक उत्तराधिकारी होने के कारण समुद्रगुप्त को लिच्छवि राज्य प्राप्त हुआ।[२८]

चन्द्रगुप्त की भांति समुद्रगुप्त ने भी शक-कुषाणों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए थे२९ सुधाकर चट्टोपाध्याय का विचार है कि आधुनिक लघमान में स्थित भुरूण्डों ने समुद्रगुप्त के साथ किसी प्रकार के सम्बंध स्थापित किये होंगे।[३०]

चन्द्रगुप्त द्वितीय (३७५-४१५ ई०) ने भी, जो अपने पिता के समान दूरदर्शी एवं कूटनीतिज्ञ था, सर्वप्रथम वैवाहिक सम्बंधों द्वारा अपनी आंतरिक स्थिति सुदृढ़ की। इस उद्देश्य से उसने अपने समय के तीन प्रमुख राजवंशो के साथ विवाह सम्बंध स्थापित किये।[३१]

१.चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शक्तिशाली नागवंश से वैवाहिक सम्बंध स्थापित किया।[३२] ये नाग राजवंश मथुरा, अहिछत्रा, पद्मावती में शासन करते थे। उनका सहयोग प्राप्त करने हेतु चन्द्रगुप्त ने नाग राजकुमारी कुबेरनागा के साथ विवाह किया जिससे एक कन्या प्रभावती गुप्ता उत्पन्न हुई।[३३] पूना ताम्रपत्र में उसने अपनी माता को 'नागकुलसंभूता' (नागकुल में उत्पन्न) कहा है। इस वैवाहिक सम्बंध से चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उनका समर्थन प्राप्त कर लिया। यह गुप्तों की नवस्थापित चक्रवर्ती स्थिति में बड़ा ही उपयोगी सिद्ध

हुआ।[३४]

२.चन्द्रगुप्त ने दूसरा महत्वपूर्ण वैवाहिक सम्बंध आधुनिक महाराष्ट्र मे शासन करने वाले शक्तिशाली वाकाटक राजवंश में किया। चन्द्रगुप्त द्वितीय को गुजरात व कठियावाड़ के शकों पर विजय प्राप्त करने के लिये वाकाटकों का सहयोग आवश्यक था। अतः चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय के साथ कर दिया।[३५] विवाह के कुछ समय पश्चात् रूद्रसेन की मृत्यु हो गयी तथा प्रभावती गुप्ता अल्पवयस्क पुत्रों दिवाकरसेन तथा दामोदरसेन की संरक्षिका बनी। उसी के शासनकाल में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने गुजरात और कठियावाड़ की विजय की तथा प्रभावती ने अपने पिता को यथासंभव सहायता दी।[३६] इस प्रकार गुप्तों व वाकाटकों की सम्मिलित शक्ति ने शकों का उन्मूलन किया। इन घटनाओं की पुष्टि पूना ताम्रपत्र से होती है।[३७]

३.चन्द्रगुप्त द्वितीय ने तीसरा वैवाहिक सम्बंध कुन्तल (कर्नाटक) राज्य में शासन करने वाले कदम्ब राजवंश के साथ स्थापित किया था। तालगुण्ड अभिलेख से ज्ञात होता है कि कदम्ब नरेश काकुस्थर्मन ने अपनी एक पुत्री का विवाह किसी गुप्त राजकुमार से किया था।[३८] वह चन्द्रगुप्त द्वितीय के पुत्र कुमारगुप्त प्रथम का विवाह कदम्ब राजवंश में हुआ होगा। इस वैवाहिक सम्बंध के फलस्वरूप चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की ख्याति सुदूर दक्षिण में फैल गयी।[३९] चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा स्थापित विवाह सम्बन्धों के फलस्वरूप उनके साम्राज्य का महत्वपूर्ण विकास हुआ। (चित्र संख्या-३)

वाकाटक राजवंश के भी कुछ शासकों ने अपनी शक्ति को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिये कुछ महत्वपूर्ण वैवाहिक सम्बंध स्थापित किये। विदित है कि प्रभावती गुप्ता व वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय का विवाह वाकाटकों के लिये भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। रूद्रसेन द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय ने ही प्रभावती गुप्ता को प्रशासनिक कार्यों में सहायता प्रदान की तथा अपने योग्य व अनुभवी मंत्रियों को वाकाटक दरबार में भेजा।[४०] एक अन्य वाकाटक नरेश प्रवरसेन द्वितीय ने भी अपने पुत्र नरेन्द्रसेन का विवाह कदम्ब वंश की राजकुमारी अजीत भट्टारिका के साथ किया। संभवतः यह काकुस्थवर्मन की ही कन्या थी। इन वैवाहिक सम्बंधो से वाकाटक वंश की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुयी। ज्ञातव्य है कि काकुस्थवर्मन की एक कन्या का विवाह गुप्तवंश में भी हुआ था। इस वैवाहिक सम्बंध से गुप्त तथा वाकाटक राजवंश परस्पर निकट आ गये और उनका द्वेषभाव समाप्त हो गया।[४१]

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि प्राचीन भारत की राजनीति में उपर्युक्त वैवाहिक सम्बन्धों की अति महत्वपूर्ण भूमिका रही। तत्कालीन राजनीतिक दशा एवं दिशा को प्रभावित करने में इनका महती योगदान रहा। सम्राटों के यश एवम् अपयश की कहानी भी बहुत सीमा तक इन वैवाहिक सम्बन्धों पर बुनी जाती रही। साम्राज्यवादी भावना को प्रोत्साहित करने में भी इन सम्बन्धों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं इनके द्वारा प्राचीन भारतवर्ष को एकता के सूत्र में भी बांधने का प्रयास किया गया। कूटनीतिज्ञ एवं कुशल शासकों ने इन सम्बन्धों द्वारा शांति व्यवस्था स्थापित करने का कार्य भी किया और अपने योग्य प्रशासनिक संचालन से साम्राज्यवादी एकता का विकास किया।

संदर्भ–

१.हेमचन्द्र राचौधरी, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, १९७६, इंडियन प्रेस प्रा० लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. १५३

२.Vidhyadhar Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, p-243.

३.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. ११३

४.Dhammapada Commentary (Harvard, 29.60; 30, 225) के अनुसार बिम्बिसार तथा पसेनदि एक दूसरे की बहन से विवाह कर वैवाहिक सूत्र में बंधे थे ; Vidhyadhar Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, p-243.

५.हेमचन्द्र राचौधरी, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, १९७६, इंडियन प्रेस प्रा० लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. १५३

६.Dictionary of Pali proper Names (Malalasekera, I.34) ; Vidhyadhar Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, p-243.

७.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. ११३

८.वही

९.R.C. Majumdar, The Age of Imperial unity His diplomatic and matrimonial relations must have helped him consideraldy in the aggressive policy initiated by him.

१०.हेमचन्द्र राचौधरी, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, १९७६, इंडियन प्रेस प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. १५७ ;Vidhyadhar Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, p-246

११.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ.११६

१२.मज्झिम निकाय ; हेमचन्द्र राचौधरी, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, १९७६, इंडियन प्रेस प्रा० लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ० १६०

१३.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ० ११६-११७

१४.Indian Antiquary., vol. vi, p-114 ; gYVt, xxxiv

१५.Vidhyadhar Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, P-२८८ य कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. २३६- अप्पियानुस स्पष्ट रूप से 'केदोस' (वैवाहिक सम्बन्ध) का प्रयोग करता है, जबकि स्ट्रेबो (xv) केवल संकेत करता है। 'विवाह के बाद वे देश मिले' से स्पष्ट है कि विवाह हुआ था।

१६.वही
१७.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. २२५
१८.जूनागढ़ अभिलेख – 'नरेन्द्रकन्यास्वयंवरानेकमाल्यप्राप्तदाम्ना' ; कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद पृ० ३५४
१९.वही, पृ. ३६६
२०.V.D. Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, p-४७५
२१.ए.एल. श्रीवास्तव, ''ए सिल्वर क्वायन आफ चन्द्रगुप्त कुमारदेवी टाइप'–जर्नल आफ द न्यूमिसमेटिक सोसाइटी आफ इण्डिया,'' खण्ड–३७, १९७५, पृ. ८३–८४
२२.हेमचन्द्र राचौधरी, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, १९७६, इंडियन प्रेस प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. ३९३
२३.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. ४०२
२४.वी.ए. स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री आव इण्डिया, पृ. २७९
२५.कैटलाग आफ द क्वायंस आफ द गुप्त डाइनेस्टी, पृ. १९
२६.Majundar and Altekar, The Vakataka Cupta Age, Lahore, 1946, p-128
"It appear more probable that the marriage alliance of Chandragupta-I was highly important from a political rather than social point of view.
२७.H.C. Raychaudhary, Political History of Ancient India, p-५३०
"Like his great forerenner Bumlrisara, his strengthened the position at same stage of jhis career by a matrimonial alliance with the Lichhavis and laid the foundations of the second magadhan empire."
२८.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. ४०३
२९.वही, पृ० ४२५
३०.V.A. Smith, Early History of India, p-१९४
३१.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ० ४२५
३२.V.D. Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, p-४९८
३३.वही
३४.Majumdar and Altekar, the Vakataka Gutpt Age, Lahore, १९४६
"A marriage alliance with them might have been of great use to Chaudra Cupta in consolidating the newly established imperial position of the Guptas."
३५.V.D. Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, p-४९८
३६.Majumdar and Altekar, The Vakataka Gupta Age, Lahore, १९४६, p-११२
३७.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. ४२६
३८.गुप्तादिपार्थिव–कुलाम्बुरुहस्थलानि,
स्नेहादर –प्रणय सम्भ्रम केसराणि।
श्रीमन्त्यनेक–नृपषटपद्सेवितानि,
योडबोधयद्दुहितृ–दीधितिभिनृपार्क्कः।। – तालगुण्ड अभिलेख ;
V.D. Mahajan, Ancient India, 1990, New Delhi, p-४९९
३९.कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, २०००, यूनाइटेट बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. ४२६
४०.वही, पृ. ४९२
४१.वही, पृ. ४९३

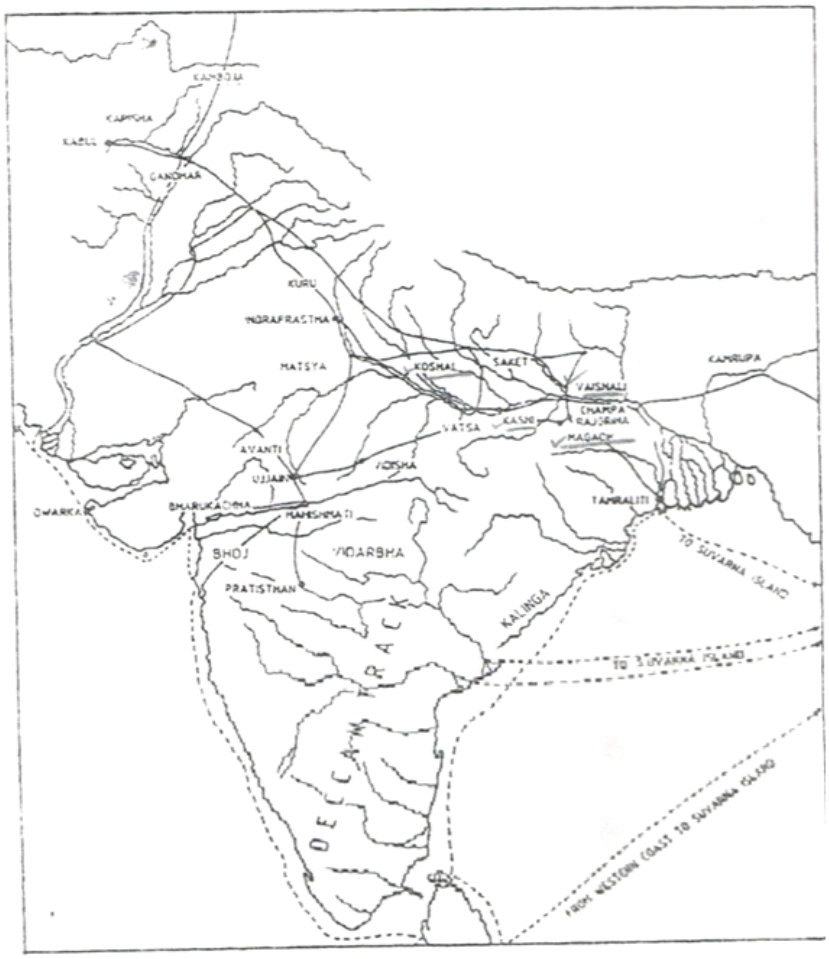

चित्र संख्या–1

चित्र संख्या–2

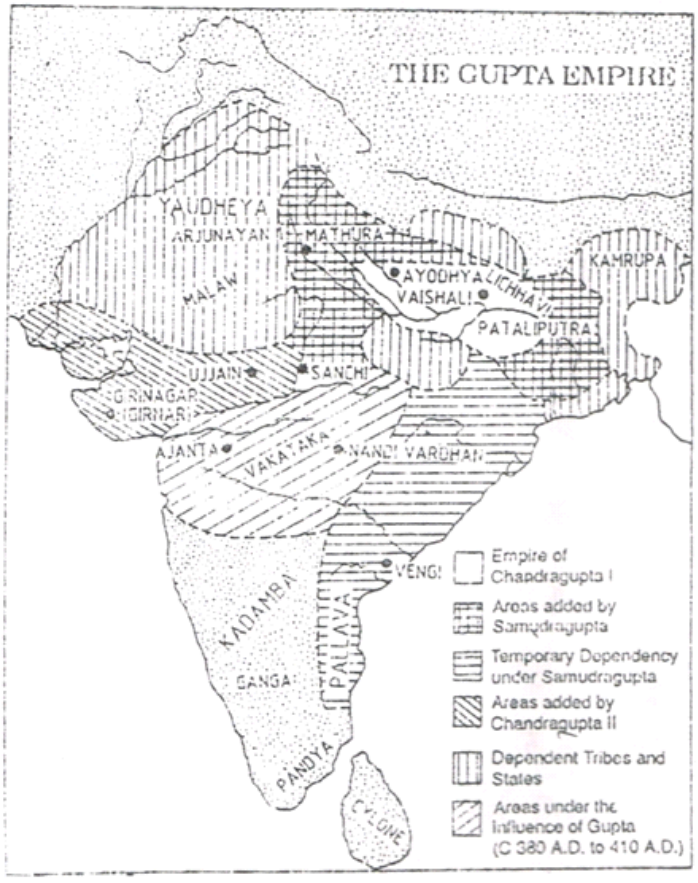

चित्र संख्या–3

वन्दना संत
सहायक प्रोफेसर , नारी शिक्षा निकेतन पी०जी० कॉलेज, लखनऊ.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org